International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 4, July 2021 |

वर्तमान समय में संगीत में घरानो की उपयोगिता

Shachi Vyas

Assistant Professor, Department of Music (Vocal), Sister Nivedita Girls College, Bikaner, Rajasthan, India

सार: यदि देख जाए तो " घरानों का अस्तित्व केवल संगीत में ही नहीं अपितु मनुष्य के दैनिक जीवन से भी सम्बन्धित है । " उसका प्रयोजन , आधार, महत्त्व क्या है ? यदि इन पर दृष्टिपात करें तो यही ज्ञात होता है कि घराने हमारी सांस्कृतिक सामाजिक परम्परा को दृढ़ रखने व समाज की विकासधारा, उपयोगिता को आगे बढ़ाने व मनुष्य की अनुशासन, संयम व पूर्वजों के प्रति श्रद्धा आदि की शिक्षा देने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए । घरानों के रूप में ही परम्परा को प्रधानता देते हुए प्राचीन संगीत का स्वरूप तथा विशिष्ट लक्षण आधुनिक समय में कुछ सीमा तक सुरक्षित रह सके और शास्त्रीय संगीत की धारा अखिल गति से प्रवाहित हो सकी ।

अतः हिन्दुस्तानी संगीत को जीवित रखने का तथा समय – समय पर समसामयिक प्रभाव कुछ सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक मिश्रण अथवा परिवर्तन होने पर भी संगीत के अविरल प्रवाह का श्रेय प्रमुखतः उन परम्पराओं को ही प्राप्त है जो वर्षों से गुरु – शिष्य परम्परा के रूप में चली आ रही हैं और जिसके कारण भारतीय संगीत के मूल आधार व मूल स्वरूप का संरक्षण किया जा सका ।

उन गुरुओं व शिष्यों की मेहनत , लगन व परिश्रम का ही फल है कि संगीतज्ञों के माध्यम से प्राचीन बन्दिशें अपनी सैद्धान्तिक गरिमा को बरकरार रखते हुए जीवित कला के रूप में आधुनिक समय तक पहुँच सकी तथा शास्त्रों वर्णित स्वरात्मक व लयात्मक प्रयोगों का विशिष्ट अंश अलंकारों के साथ अपने प्रयोगात्मक रूप में नवीन संगीतज्ञों तक पहुँच सका जिसका श्रेय संगीत के परम्परागत या घरानेदार साधकों को ही जाता है ।

प्रत्येक घराने में शिष्यों के रूप में गायन की शैली – वादन की शैली विशेष रूप से जीवित रह सकी जिसकी उपयोगिता / छाप उस घराने के प्रत्येक शिष्य पर मोहर की भाँति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है । इन शिष्यों अथवा संगीतज्ञों के द्वारा ही प्राचीन संगीत की झलक हम तक पहुँच सकी ।

इन संगीतज्ञों के अभाव में दूसरे किसी भी रूप द्वारा संगीत जैसी कला का प्राचीन रूप इतनी स्पष्टता से जीवित नहीं रह सकता था । इसलिए जितनी आवश्यकता प्राचीन शास्त्रों को व ग्रन्थों को सुरक्षित रखने की है उतनी ही आवश्यकता संगीतज्ञों द्वारा इस संगीत को जीवित रखने की है ।

I. परिचय

घरानों के महत्त्व और उपयोगिता को हम इस प्रकार भी देख सकते हैं कि जिस प्रकार समाज में परिवार एवं परम्परा के अभाव में व्यक्ति की प्रतिष्ठा एवं परिचय सम्भव नहीं , उसी प्रकार किसी कलाकार को अपना परिचय देने में कला क्षेत्र में स्वयं के प्रावीण्य के साथ सम्बद्ध घराने की प्रतिष्ठा की भी आवश्यकता होती है ।

अतः हिन्दुस्तानी संगीत को उच्च स्थान प्राप्त कराने , विकसित कराने व उसके संरक्षण में घरानों की निःसन्देह विशेष उपयोगिता एवं महत्त्व है ।

घराना शास्त्रीय संगीत[1,2,3]
|भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की वह परंपरा है जो एक ही श्रेणी की कला को कुछ विशेषताओं के कारण दो या अनेक उप श्रेणियों में बाँटती है।
घराना (परिवार,कुटुंब), हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशिष्ट शैली है, क्योंकि हिंदुस्तानी संगीत बहुत विशाल भौगोलिक क्षेत्र में विस्तृत है, कालांतर में इसमें अनेक भाषाई तथा शैलीगत बदलाव आए हैं।

इसके अलावा शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परंपरा में प्रत्येक गुरु वा उस्ताद अपने हाव-भाव अपने शिष्यों की जमात को देता जाता है। घराना किसी क्षेत्र विशेष का प्रतीक होने के अलावा, व्यक्तिगत आदतों की पहचान बन गया है, यह परंपरा ज़्यादातर संगीत शिक्षा के पारंपरिक तरीके तथा संचार सुविधाओं के अभाव के कारण फली-फूली, क्योंकि इन परिस्थितियों में शिष्यों की पहुँच संगीत की अन्य शैलियों तक बन नहीं पाती थी।

मध्य काल में देशी रियासतें बन गई जहाँ घरानों का जन्म और विकास हुआ । तानसेन के पूर्व कोई घराना नहीं मिलता है । मुगलों के पतन और ब्रिटिश राज्य की स्थापना से छोटी – छोटी रियायतें बन गई । हरेक रियासत में कुछ गायक – वादक जरूर होते थे । उन्हें

राजा को गायन – वादन से खुश करना पड़ता था और बदले में राजा से पूर्ण आश्रय मिलता था । वे बड़े आराम से अपनी ज़िन्दगी बिताते और जब कभी कोई शिष्य उनसे सीखने आता तो उसे सिखाने में कतराते नहीं थे । केवल वही शिष्य काफी दिनों तक लगे रहने के बाद थोड़ा – बहुत सीख पाता था जो उस्ताद की सेवा करने में कुछ बाकी न रखता था ।
शिष्य पर उस्ताद की बड़ी निगरानी रहती । न तो उसे किसी अन्य गायक को सुनने की इजाजत रहती और न बिना उस्ताद की इजाजत के कहीं गा पाता । उस समय रेडियो व संगीत – सम्मेलन आदि साधन उपलब्ध नहीं थे । इस नियंत्रण का परिणाम अच्छा भी था और बुरा भी । अच्छा इस दृष्टि से कि शिष्य पर वाह्य प्रभाव न पड़ता और उसके बहकने की गुंजाइश न रहती । बुरा इस दृष्टि से कि कभी – कभी अयोग्य गुरू के पंजों में फँसकर वह अपने को नष्ट कर देता और उसे आँख खोलने का अवसर न मिलता ।

तानसेन के वंशजों से गायन के घराने का निर्माण माना जाता है । उनके पुत्र के वंशज सेनिये कहलाये जो ध्रुपद गाते थे और बीन बजाते थे । उनकी पुत्री के वंशज बानिये कहलाये जो ध्रुपद तो गाते ही थे , रबाब बजाते थे । ख्याल के छोटे – बड़े घराने अनेक हो गये , किन्तु मुख्य सात घराने माने जाते हैं जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

II. गायन के 7 घराने

(1) ग्वालियर घराना Gwalior Gharana
(1) ग्वालियर घराना – स्वर्गीय नत्थन पीरबख्श को इस घराने के जन्मदाता माना जाता हैं । उनके दो पुत्र कादर बख़्श और पीर बख्श थे । कादर बख्श ग्वालियर नरेश स्वर्गीय दौलतराव जी महाराज के यहाँ नियुक्त थे । कादर बख़्श के तीन पुत्र हुये- हद्दू , हस्सू व नत्थू खाँ । इन लोगों ने संगीत – जगत में बड़ा नाम कमाया । नत्थू खाँ को उनके चाचा पीरबख्श ने गोद लिया था । हस्सू खाँ के पुत्र गुले इमाम खाँ थे तथा उनके पुत्र मेंहदी हुसैन खाँ थे । इस परम्परा में बालकृष्ण बुआ इचलकरन्जीकर , बासुदेव जोशी एवम् बाबा दीक्षित (नीलकंठ) थे । बालकृष्ण बुआ के शिष्य पं 0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर थे . जिन्होंने संगीत के में बड़ा हाथ बटाया ।

स्वर्गीय विनायक राव पटवर्धन , स्व 0 वी 0 ए 0 कशालकर , स्व 0 वी 0 एन 0 ठकार , स्व 0 ओंकार नाथ ठाकुर , स्व नारायण राव व्यास इत्यादि पलुस्कर जी के शिष्य थे और इसी परम्परा के गायक थे । हद्दू खाँ के दो पुत्र थे , रहमत खाँ और मुहम्मद खाँ । उनके शिष्यों में इन्दौर के रामाभाऊ तथा विष्णुपन्त छत्रे प्रमुख थे । नत्थू खाँ के दत्तक पुत्र उस्ताद निसार हुसैन खाँ थे , जिन्होंने संगीत में बड़ा नाम कमाया । नत्थू खाँ के कोई पुत्र नहीं था , इसलिए उन्होंने अपने मित्र के लड़के निसार हुसेन को गोद प्रचार ले लिया जिन्हें संगीत की अच्छी शिक्षा दी ।

निसार हुसेन की शिष्य परम्परा में शंकर राव , पं 0 भाऊराव जोशी , पं 0 रामकृष्ण बुआ बझे , राजाभैया पूँछवाले , मुश्ताक हुसेन इत्यादि थे । शंकरराव पंडित के पुत्र पं 0 कृष्णराव शंकर पंडित थे तथा शिष्य स्व 0 राजा भैया पूँछवाले थे ।

ग्वालियर घराने की विशेषतायें
1- ध्रुपद अंग के ख्याल , 2- जोरदार तथा खुली आवाज , 3 बहलावा से विस्तार , 4- गमक का प्रयोग , 5- सीधी तथा सपाट तानों का विशेष प्रयोग , 6- लयकारी और कभी – कभी लड़न्त , 7- ठुमरी के स्थान पर तराना गायन और 8 – तैयारी पर विशेष बल ।
(2) आगरा घराना Agra Gharana
(2) आगरा घराना आगरा घराने का विशेष सम्बन्ध ग्वालियर घराने से है , इसलिये बहुत सी बातें आपस में मिलती – जुलती हैं । आगरा घराना के संस्थापक सुजान खाँ थे । आगे चलकर इस घराने का प्रचार घग्गे प्रवर्तक सुजान खुदाबख्श द्वारा हुआ । वे ग्वालियर के नत्थन पीरबख्श (हस्सू , हद्दू , नत्थू खाँ के बाबा) के शिष्य बन गये थे और उनसे ख्याल – गायकी की शिक्षा ली और फिर आगरा चले गये । इस प्रकार ग्वालियर घराने की विशेषतायें आगरा चली गई । खुदाबख्श और खाँ भाई – भाई थे । जग्गू खाँ के पौत्र नत्थन को संगीत शिक्षा घग्गे खुदा बख्श के पुत्र गुलाम अब्बास खाँ से प्राप्त हुई । गुलाम अब्बास खाँ स्व0 उस्ताद फैयाज खाँ आगरा घराने के रत्न माने जाते थे । नत्थन खाँ की गायकी का प्रभाव फैयाज़ खाँ के शिष्यों में शराफत हुसेन और लताफत हुसेन प्रमुख थे , जो आगरा जग्गू घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । नत्थन पीरबख्श के पुत्र विलायत हुसैन की मृत्यु कुछ वर्षों पूर्व हुई है ।

आगरा घराने की विशेषतायें
आगरा घराने की विशेषतायें 1- ग्वालियर घराने की तरह खुली किन्तु जवारीदार आवाज़ , 2- ध्रुपद के समान ख्याल में भी नोम – तोम का आलाप , 3- जबड़े का अधिक प्रयोग , 4- बन्दिशदार चीजें , 5- बोलतानों की विशेषता , 6- ख्याल के अतिरिक्त ध्रुपद , धमार और ठुमरी में प्रवीणता , 7 लय – ताल पर विशेष अधिकार ।

(3) दिल्ली घराना Delhi Gharana
(3) दिल्ली घराना मुगलों के पतन के बाद तानरस खाँ ने इस घराने को शुरू किया । तानरस खाँ के तानों में एक अजीब बात यह थी कि उनकी तानों से ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों बहुत से पक्षी एकदम उड़ गये हों । तानरस खाँ के पुत्र उमराव खाँ ने इस घराने को आगे बढ़ाया । पटियाला घराना के प्रसिद्ध उस्ताद अलैया और फत्ते अली खाँ ने तानरस खाँ से शिक्षा पाई थी । अभी तक उस्ताद चाँद खाँ इस घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे ।

दिल्ली घराने की विशेषतायें
दिल्ली घराने की विशेषतायें 1- ख्याल की कलापूर्ण बन्दिश , 2- तानों में निरालापन , 3 द्रुत लय में बोल तानों का प्रयोग , 4- तैयारी पर बल ।

(4) जयपुर घराना Jaipur Gharana
(4) जयपुर घराना आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व मुहम्मद अली खाँ ने जयपुर घराने को जन्म दिया था । कुछ लोगों का विचार है कि इस घराने के प्रवर्तक मनरंग थे । मुहम्मद अली इनके वंशज माने जाते हैं । इनके पुत्र प्रसिद्ध संगीतज्ञ आशिक अली खाँ थे । आशिक अली हाँ पहले गाना गाते थे किन्तु बाद में सितार बजाने लगे । इनके शष्यों में जी 0 एन 0 गोस्वामी , मुश्ताक अली , अनवरी बेगम , रसूलन नाई प्रमुख हैं । [4,5,6]

जयपुर घराने की विशेषतायें
जयपुर घराने की विशेषतायें 1- गीत का संक्षिप्त बन्दिश , 2- वक्र तानें तथा छोटी – छोटी तानों से आलाप की बढ़त , 3- आवाज लगाने का अपना ढंग , 4 खुली आवाज का गायन , 5- स्वर – सौन्दर्य पर विशेष बल इत्यादि । इस घराने के अलैया और फत्तू ने तथा अल्लादिया खाँ ने दो पृथक् घरानों को जन्म दिया , जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

(5) पटियाला घराना Patiyala Gharana
(5) पटियाला घराना इस घराने को अलैया जिन्हें अलीबख्श कहते थे तथा फत्तू जिन्हें फतेह अली कहते थे , इन दो भाइयों ने चलाया । कुछ लोगों का विचार है कि इन लोगों के पिता बड़े मियाँ कालू खाँ ने इस घराने की नींव डाली । इन दो भाइयों ने जयपुर की गोरखी बाई , बैरामखाँ तथा तानरस खाँ से शिक्षा प्राप्त की थी और पटियाला घराने को बढ़ाया । अभी तक इस घराने का प्रतिनिधित्व बड़े गुलाम अली खाँ कर रहे थे । बड़े गुलाम अली खाँ को अपने चाचा काले खाँ से शिक्षा मिली । बड़े गुलाम अली खाँ के पिता अलीबख्श और चाचा काले खाँ को बड़े कालू खाँ से शिक्षा प्राप्त हुई । काले खाँ को फतेह अली द्वारा भी शिक्षा मिली थी । बड़े गुलाम अली खाँ के पुत्र मुनव्वर अली खाँ अभी तक इस घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे ।

पटियाला घराने की विशेषतायें
पटियाला घराने की विशेषतायें (1) ख्याल की कलापूर्ण बन्दिश किन्तु संक्षिप्त ख्याल (2) अलंकारिक , वक्र तथा फिरत तानों का प्रयोग , (3) तानों की तैयारी और उनका अधिक प्रयोग (4) ख्याल के साथ पंजाब अंग की दुमरी गाने में निपुणता और (5) गले की तैयारी । (256)

(6) अल्लादिया खाँ का घराना Alladiya Khan ka Gharana
(6) अल्लादिया खाँ का घराना अल्लादिया खाँ ने अपनी स्वतंत्र गायन – शैली द्वारा एक नया घराना चलाया । उन्होंने जहाँगीर खाँ से संगीत – शिक्षा प्राप्त की थी । जहाँगीर खाँ ने अपने पिता ख्वाजा अहमद से और ख्वाजा ने मानतोल खाँ से शिक्षा ग्रहण की थी । बाद में खाँ साहब अल्लादिया खाँ महाराष्ट्र में रहने लगे , उनके भाई हैदर खाँ थे जो एक उच्चकोटि के गायक थे । स्वरा भास्कर बुआ बखले ने संगीत – जगत में अच्छा नाम कमाया । मंजी खाँ और भुर्जी खाँ अपने समय के बड़े अच्छे कलाकार थे । ये दोनों भाई थे और अल्लादिया खाँ के पुत्र थे । मंजी खाँ का पूरा नाम बदरूदीन खाँ और भुर्जी खाँ का पूरा नाम शमशुदीन खाँ था । आजकल इस घराने के प्रतिनिधि कलाकार थे- केसरबाई केरकर , मोघूबाई कुर्डीकर तथा शंकरराव सरनाइक आदि ।

अल्लादिया घराने की विशेषतायें
अल्लादिया घराने की विशेषतायें (1) बुद्धि प्रधान और पेंचदार गायकी , (2) बोल अंगों की विशेषता , (3) गीत को भरने का अपना विशेष ढंग , (4) अप्रचलित रागों की ओर विशेष झुकाव , (5) विलम्बित लय में गायन , (6) कठिन गायकी ।

(7) किराना घराना Kirana Gharana
(7) किराना घराना इस घराने की बुनियाद मुगल काल में हुई थी । बाढ़ के कारण दोताही के संगीतज्ञों को जहाँगीर ने यू 0 पी 0 में ही जिला मुजफ्फरनगर के किराना नामक स्थान में बसा दिया । इस घराने का नाम उस स्थान के आधार पर पड़ा । सादिक अली खाँ वहाँ के एक प्रसिद्ध बीनकार थे । उनके सुपुत्र उ 0 बन्दे अली खाँ एक अच्छे बीनकार और गायक हुये । वे इन्दौर दरबार के संगीतज्ञ और महाराजा के गुरू भी थे । उस्ताद बंदे अली खाँ के शिष्यों के हुये , जिनमें प्रमुख थे मुराद खाँ बीनकार और नन्हें खाँ ध्रुपदिया जिनके शिष्य और अब्दुल वहीद खाँ इस घराने के थे अलीबख्श और मौलाबख्श । आगे चलकर अब्दुल करीम खाँ मुख्य प्रतिनिधि इस घराने को बहुत आगे बढ़ाया । अब्दुल करीम खाँ अपनी मधुर आवाज तथा मोहक गायकी के कारण अधिक लोकप्रिय हुए । अब्दुल वहीद खाँ करीम खाँ के निकट सम्बन्धी थे जो मिरज में रहते थे तथा इस घराने के प्रतिनिधि थे । करीम खाँ चार भाई थे अब्दुल हक , अब्दुल गनी , अब्दुल मजीद और स्वयं । स्वर्गीय रामाभाऊ कुन्दगोलेकर (सवाई गन्धर्व) तथा स्व ० सुरेश बाबू माने इसी परम्परा के गायक थे , जिन्होंने अब्दुल करीम खाँ से शिक्षा प्राप्त की थी । आजकल इस घराने के प्रमुख प्रतिनिधि कलाकार हैं स्व 0

हीराबाई बडोदेकर , पं0 भीमसेन जोशी , सरस्वती बाई राने , बस्वराज राजगुरू , गंगूबाई हंगल , स्व0 रज्जब अली खाँ , स्व ० उस्ताद अमीर खाँ , बहरे बुआ , पाकिस्तान की श्रीमती रोशन आरा बेगम इत्यादि । सवाई गन्धर्व से भीमसेन जोशी , गंगूबाई हंगल तथा बस्वराज राजगुरू ने संगीत – शिक्षा ग्रहण की ।

किराना घराने की विशेषतायें[7,8,9]
किराना घराने की विशेषतायें (1) आलाप प्रधान गायकी , (2) स्वर लगाने की भावपूर्ण ढंग , (3) स्वर की विलम्बित बढ़त , (4) चैनदार गायकी , (5) विलम्बित लय प्रधान गायकी ।
गायन के घराने से सम्बंधित प्रश्न – उत्तर
घराने शब्द का अर्थ क्या है? घराना का क्या मतलब है? घराने का क्या तात्पर्य है ?
संगीत में घराना शब्द का अर्थ है वंश – परंपरा । विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी चला आना ।
गायन के घराने कितने हैं?
यूँ तो कई सारे घराने हैं पर मुख्य रूप से 7 घराने प्रचलित हैं ।
भारतीय शास्त्रीय संगीत में कौन कौन से घराने हैं?
भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों के नाम इस प्रकार हैं –
ग्वालियर घराना,
आगरा घराना,
दिल्ली घराना,
जयपुर घराना,
पटियाला घराना,
किराना घराना,
अल्लादिया खाँ घराना

III. विचार-विमर्श

हम शास्त्रीय संगीत की दो पद्धतियों को पहचानते हैं: हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक। कर्नाटक संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित है। शेष देश के शास्त्रीय संगीत का नाम हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत है। नि:संदेह कर्नाटक और आंध्र में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ हिंदुस्तानी शास्त्रीय पद्धति का भी अभ्यास किया जाता है। सामान्य रूप से ऐसा माना जाता है कि तेरहवीं शताब्दी से पूर्व भारत का संगीत कुल मिलाकर एकसमान है, बाद में जो दो पद्धतियों में विभाजित हो गया था।

परिचय
भारतीय संगीत के इतिहास में भरत का नाट्यशास्त्र एक महत्त्वपूर्ण सीमाचिह्न है। नाट्यशास्त्र एक व्यापक रचना या ग्रंथ है जो प्रमुख रूप से नाट्यकला के बारे में है लेकिन इसके कुछ अध्याय संगीत के बारे में हैं। इसमें हमें सरगम, रागात्मकता, रूपों और वाद्यों के बारे में जानकारी मिलती है। तत्कालीन समकालिक संगीत ने दो मानक सरगमों की पहचान की। इन्हें ग्राम कहते थे। 'ग्राम' शब्द संभवत: किसी समूह या संप्रदाय उदाहरणार्थ एक गाँव के विचार से लिया गया है। यही संभवत: स्वरों की ओर ले जाता है जिन्हें ग्राम कहा जा रहा है। इसका स्थूल रूप से सरगमों के रूप में अनुवाद किया जा सकता है।

- उस समय दो ग्राम प्रचलन में थे। इनमें से एक को षडज ग्राम और अन्य को मध्यम ग्राम कहते थे। दोनों के बीच का अंतर मात्र एक स्वर पंचम में था। अधिक सटीक रूप से कहें तो हम यह कह सकते हैं कि मध्यम ग्राम में पंचम षडज ग्राम के पंचम से एक श्रुति नीचे था।
- इस प्रकार से श्रुति मापने की एक इकाई है या एक ग्राम अथवा एक सरगम के भीतर विभिन्न क्रमिक तारत्वों के बीच एक छोटा-सा अंतर है। सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिये इनकी संख्या 22 बताई जाती है। प्रत्येक ग्राम से अनुपूरक सरगम लिये गए हैं। इन्हें मूर्छना कहते हैं। ये एक अवरोही क्रम में बजाए या गाए जाते हैं। एक सरगम में सात मूलभूत स्वर होते हैं, अत: सात मूर्छना हो सकते हैं।

लगभग ग्यारहवीं शताब्दी से मध्य और पश्चिम एशिया के संगीत ने भारत की संगीत की परंपरा को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे इस प्रभाव की जड़ गहरी होती चली गई और कई परिवर्तन हुए। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन था- ग्राम और मूर्छना का लुप्त होना।

लगभग 15वीं शताब्दी के आसपास, परिवर्तन की यह प्रक्रिया सुस्पष्ट हो गई थी, ग्राम पद्धति अप्रचलित हो गई थी। मेल या थाट की संकल्पना ने इसका स्थान से लिया था। इसमें मात्र एक मानक सरगम है। सभी ज्ञात स्वर एक सामान्य स्वर 'सा' तक जाते हैं। लगभग अठारहवीं शताब्दी तक यहाँ तक कि हिंदुस्तानी संगीत के मानक या शुद्ध स्वर भिन्न हो गए थे। अठारहवीं शताब्दी से स्वीकृत, वर्तमान स्वर है:

सा रे ग म प ध नि

वर्तमान में प्रचलित कुछ प्रमुख शैलियाँ

'ध्रुपद', 'धमर', 'होरी', 'ख्याल', 'टप्पा', 'चतुरंग', 'रससागर', 'तराना', 'सरगम' और 'ठुमरी' जैसी हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं।

- ध्रुपद
  - यह हिंदुस्तानी संगीत के सबसे पुराने और भव्य रूपों में से एक है। यह नाम 'ध्रुव' और 'पद' शब्दों से मिलकर बना है जो कविता के छंद रूप और उसे गाने की शैली दोनों को प्रदर्शित करते हैं।
  - अकबर के शासनकाल में तानसेन और बैजूबावरा से लेकर ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर के दरबार तक ध्रुपद गाने वाले प्रवीण गायकों के साक्ष्य मिलते हैं। यह मध्यकाल में गायन की प्रमुख विधा बन गई, परंतु 18वीं शताब्दी में यह ह्रास की स्थिति में पहुँच गई।
  - ध्रुपद एक काव्यात्मक रूप है, जिससे राग को सटीक तथा विस्तृत शैली में प्रस्तुत किया गया है। ध्रुपद में संस्कृत अक्षरों का उपयोग किया जाता है और इसका उद्गम मंदिरों से हुआ है।
  - ध्रुपद रचनाओं में सामान्यत: 4 से 5 पद होते हैं, जो युग्म में गाए जाते हैं। सामान्यतः दो पुरुष गायक ध्रुपद शैली का प्रदर्शन करते है। तानपुरा और पखावज सामान्यतः इनकी संगत करते है। वाणी या बाणी के आधार पर, ध्रुपद गायन को आगे और चार रूपों में विभाजित किया जा सकता है। [10,11]
- डागरी घराना
  - इस शैली में आलाप पर बहुत बल दिया जाता है। ये डागर वाणी में गायन करते हैं। डागर मुसलमान गायक होते हैं, लेकिन सामान्यतः हिंदू देवी-देवताओं के पाठों का गायन करते हैं। उदाहरण के लिये, जयपुर के गुन्देचा भाई।
- दरभंगा घराना
  - इस घराने में ध्रुपद खंडार वाणी और गौहर वाणी में गायन होता है। ये रागालाप पर बल देते है और साथ ही तात्कालिक अलाप पर गीतों की रचना करते हैं।
  - इस शैली का प्रतिनिधि मलिक परिवार है। इस घराने के कुछ प्रसिद्ध गायक हैं- राम चतुर मलिक, प्रेम कुमार मलिक और सियाराम तिवारी।
- बेतिया घराना
  - यह घराना केवल परिवार के भीतर प्रशिक्षित लोगों को ज्ञात कुछ अनोखी तकनीकों वाली 'नौहर और खंडार वाणी' शैलियों का प्रदर्शन करता है। इस शैली का प्रतिनिधि मिश्र परिवार है। इस शैली के गायक हैं-इंद्र किशोर मिश्रा। इसके अतिरिक्त बेतिया और दरभंगा शैलियों में प्रचलित ध्रुपद का रूप हवेली शैली के रूप में जाना जाता है।
- तलवंडी घराना
  - यहाँ खण्डर वाणी गाई जाती है चूँकि यह परिवार पाकिस्तान में स्थित है इसलिये इसे भारतीय संगीत व्यवस्था में शामिल करना कठिन हो जाता है।

घराना प्रणाली
▪ घराना वंश या प्रशिक्षुता और विशेष संगीत शैली के अनुपालन द्वारा संगीतकारों या नर्तक/नर्तकियों को जोड़ने वाली सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है। ▪ घराना शब्द उर्दू/हिंदी शब्द 'घर' से लिया गया है जिसका अर्थ 'परिवार' या 'घर' होता है। यह सामान्यतः उस स्थान को इंगित करता है जहाँ से या संगीतात्मक विचारधारा उत्पन्न हुई है। घराने व्यापक संगीत शास्त्रीय विचारधारा को दर्शाते हैं और इनमें एक शैली से दूसरी शैली में अंतर होता है। ▪ यह प्रत्यक्ष रूप से संगीत की समझ, शिक्षण, प्रदर्शन एवं प्रशंसा को प्रभावित करते है। ▪ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के गायन के लिये प्रसिद्ध घरानों में से निम्न घराने शामिल होते हैं: आगरा, ग्वालियर, इंदौर, जयपुर, किराना, और पटियाला।

खयाल (ख्याल)

- 'खयाल' (ख्याल) शब्द फारसी भाषा से लिया गया है, इसका अर्थ होता है 'विचार या कल्पना'। इस शैली के उद्भव का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है। संगीत का यह रूप कलाकारों के बीच काफी लोकप्रिय है। खयाल (ख्याल) दो से लेकर आठ पंक्तियों वाले लघु गीतों के रंग पटल पर आधारित है। सामान्य तौर पर खयाल (ख्याल) रचना को 'बंदिश' के रूप में भी जाना जाता है।
- 15वीं सदी में सुल्तान मोहम्मद शर्की खयाल (ख्याल) के सबसे बड़े संरक्षक हुए। खयाल (ख्याल) की सबसे अनूठी विशेषता यह है कि इसमें तान का उपयोग किया जाता है। इसी कारण है कि ध्रुपद की तुलना में खयाल संगीत में आलाप को कम महत्त्व दिया जाता है। खयाल में दो प्रकार के गीतों का उपयोग किया जाता है।
  - बड़ा खयाल: धीमी गति में गाया जाने वाला

- छोटा खयालः तेज़ गति में गाया जाने वाला
- असाधारण खयाल रचनाएँ भगवान कृष्ण की स्तुति में की जाती हैं। खयाल संगीत के अंतर्गत प्रमुख घराने हैं:
  - ग्वालियर घरानाः यह सबसे पुराने और सबसे बड़े खयाल घरानों में से एक है। यह बहुत कठोर नियमों का पालन करता है क्योंकि यहाँ रागमाधुर्य और लय पर समान बल दिया जाता है। हालाँकि इसका गायन बहुत जटिल है, फिर भी यह सरल रागों के प्रदर्शन को वरीयता देता है। इस घराने के सबसे अधिक लोकप्रिय गायक नाथू खान और विष्णु पलुस्कर हैं।
  - किराना घराना: इस घराने का नामकरण राजस्थान के 'किराना' गाँव के नाम पर हुआ है। इसकी स्थापना नायक गोपाल ने की थी लेकिन 20वीं सदी की शुरुआत में इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय अब्दुल करीम खान और अब्दुल वाहिद खान को जाता है।
    - 'किराना' घराना धीमी गति वाले रागों पर इनकी प्रवीणता के लिये प्रसिद्ध है। ये रचना की मधुरता और गीत में पाठ के उच्चारण की स्पष्टता पर बहुत अधिक बल देते हैं। ये पारंपरिक रागों या सरगम के उपयोग को महत्त्व देते हैं। इस शैली के कुछ प्रसिद्ध गायकों में पंडित भीमसेन जोशी और गंगू बाई हंगल जैसे महान कलाकार शामिल हैं।
  - आगरा घरानाः इतिहासकारों के अनुसार 19वीं सदी में खुदा बख्श ने इस घराने की स्थापना की थी, परंतु संगीतविदों का मानना है कि इसके संस्थापक हाजी सुजान खान थे। फैयाज खान ने नवीन और गीतात्मक स्पर्श देकर इस घराने को पुनर्जीवित करने का काम किया। तब से इसका नाम रंगीला घराना पड़ गया। वर्तमान में इस शैली के प्रमुख गायकों में सी.आर. व्यास और विजय किचलु जैसे महान गायक आते हैं।
  - पटियाला घराना: बड़े फतेह अली खान और अली बख्श खान ने 19वीं सदी में इस घराने की शुरुआत की थी। इसे पंजाब में पटियाला के महाराजा का समर्थन प्राप्त हुआ। शीघ्र ही उन्होंने गजल, ठुमरी और खयाल के लिये प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। वे बृहत्तर लय के उपयोग पर बल देते थे। चूँकि उनकी रचनाओं में भावनाओं पर बल होता था अतः उनका रुझान अपने संगीत में अलंकरण या अलंकारों के उपयोग पर अधिक होता था। वे जटिल तानों पर बल देते थे।
    - इस घराने के सबसे प्रसिद्ध संगीतकार बड़े गुलाम अली खान साहब थे। वे भारत के प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायकों में से एक थे। वे राग दरबारी के गायन के लिये प्रख्यात थे। यह घराना तराना शैली के अद्वितीय तान, गमक और गायकी के लिये प्रसिद्ध है।
  - भिंडी बाज़ार घरानाः छज्जू खान, नजीर खान और खादिम हुसैन ने 19वीं सदी में इसकी स्थापना की थी। उन्होंने लंबी अवधि तक अपनी सांस नियंत्रित करने में प्रशिक्षित गायकों के रूप में लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त की। इस तकनीक का उपयोग करते हुए ये कलाकार एक ही सांस में लंबे-लंबे अंतरे गा सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसकी एक अन्य प्रमुख विशेषता यह है कि ये अपने संगीत में कुछ कर्नाटक रागों का भी उपयोग करते हैं।[9,10]
- ठुमरी
- यह मिश्रित रागों पर आधारित है और इसे सामान्यतः अर्द्ध-शास्त्रीय भारतीय संगीत माना जाता है। इसकी रचनाएँ भक्ति आंदोलन से अधिक प्रेरित है कि इसके पाठों में सामान्यतः कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम को दर्शाया जाता है। इसकी रचनाओं की भाषा सामान्य तौर पर हिंदी या अवधी या ब्रज भाषा होती है।
- इन्हें प्राय: महिला गायक द्वारा गाया जाता है। यह अन्य रूपों की तुलना में अलग है क्योंकि ठुमरी में निहित कामुकता विद्यमान होती है। दादरा, होरी, कजरी, सावन, झूला और चौती जैसे हल्के-फुल्के रूपों के लिये भी ठुमरी नाम का प्रयोग किया जाता है। मुख्य रूप से ठुमरी दो प्रकार की होती हैं:
  - पूर्वी ठुमरी: इसे धीमी गति से गाया जाता है।
  - पंजाबी ठुमरी: इसे तेज़ गति एवं जीवंत तरीके से गाया जाता है।
- ठुमरी के मुख्य घराने बनारस और लखनऊ में स्थित हैं और ठुमरी गायन में सबसे प्रसिद्ध स्वर बेगम अख्तर का है जो गायन में अपनी कर्कश आवाज़ और असीम तान के लिये प्रसिद्ध हैं।
- टप्पा शैली
- इस शैली में लय बहुत महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि रचना तीव्र, सूक्ष्म और जटिल होती हैं। इसका उद्भव उत्तर-पश्चिम भारत के ऊट सवारों के लोक गीतों से हुआ था लेकिन सम्राट मुहम्मद शाह के मुगल दरबार में प्रवेश करने पर इसे अर्द्ध-शास्त्रीय स्वरीय विशेषता के रूप में मान्यता प्रदान इ गई। इसमें मुहावरों का बहुत तीव्र और बड़ा ही घुमावदार उपयोग किया जाता है।
- टप्पा ना केवल अभिजात वर्ग बल्कि विनम्र वाद्य यंत्र वाले वर्गों की भी पसंदीदा शैली है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं सदी के प्रारम्भ में बैठकी शैली का विकास हुआ।
- वर्तमान समय में यह शैली प्राय: विलुप्त होती जा रही है तथा इसका अनुसरण करने वाले बेहद कम लोग बचे हैं। इस शैली के कुछ प्रसिद्ध गायक हैं- मियां सोदी, ग्वालियर के पंडित लक्ष्मण राव और शन्नो खुराना।
- तराना शैली
- इस शैली में लय बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इसकी संरचना लघु एवं कई बार दोहराए जाने वाले रागों से निर्मित होती है। इसमें तीव्र गति से गाए जाने वाले कई शब्दों का प्रयोग होता है। यह लयबद्ध विषय बनाने पर केंद्रित होता है और इसलिये गायक के

लिये लयबद्ध हेरफेर में विशेष प्रशिक्षण एवं कौशल की आवश्यकता होती है। वर्तमान में विश्व के सबसे तेज़ तराना गायक मेवाती घराने के पंडित रतन मोहन शर्मा है। श्रोताओं द्वारा इन्हें 'तराना के बादशाह' (तराना के राजा) की पदवी भी दी गई है।

- धमर-होरी शैली
- ध्रुपद ताल के अलावा यह शैली ध्रुपद से काफी समानता रखती है। यह बहुत ही संगठित शैली है और इसमें 14 तालों का चक्र होता है जिनका अनियमित रूप से उपयोग किया जाता है। इसकी रचनाएँ प्रकृति में सामान्यतः भक्तिपरक होती हैं और भगवान कृष्ण से संबंधित होती हैं। कुछ अधिक लोकप्रिय गीत होली त्योहार से संबंधित हैं इसी कारण वश इसकी कई रचनाओं में श्रृंगार रस नज़र आता है।
- गजल
- यह एक काव्यात्मक रूप है इसे क्षति या वियोग की पीड़ा और उस पीड़ा के होते हुए भी प्रेम की सुंदरता की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। इसका उद्भव 10वीं सदी में ईरान में हुआ, माना जाता है।
- 12वीं सदी में सूफी रहस्यवादियों और नए इस्लामी सल्तनत के दरबारों के प्रभाव के चलते दक्षिण एशिया में इसका प्रसार हुआ, परंतु मुगल काल में यह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई। ऐसा माना जाता है कि अमीर खुसरो गजल के सबसे पहले प्रतिपादकों में से एक थे। कई प्रमुख ऐतिहासिक गजल कवि या तो स्वयं को सूफी (जैसे रूमी या हाफ़िज़) कहते थे, या सूफी विचारों के साथ सहानुभूति रखते थे।
- गजल का एकमात्र विषय- प्रेम (विशेष रूप से बिना किसी शर्त के सर्वोच्च प्रेम) होता है। भारतीय उप-महाद्वीप के गज़लों पर इस्लामी रहस्यवाद का प्रभाव है।

IV. परिणाम

अक्सर जब हम संगीत की बात करते हैं तो संगीतज्ञ का 'घराना' सबसे पहले आता है. आमतौर पर अगर किसी भी गायक या वादक के नाम के साथ किसी समृद्ध घराने का नाम जुड़ा होता है तो उसका संगीत जगत में सम्मान और बढ़ जाता है. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में आगरा, ग्वालियर, इंदौर, जयपुर, किराना, और पटियाला घराना प्रसिद्ध हैं.

लेकिन, क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर ये घराना है क्या और इसका संगीत की दुनिया से क्या ताल्लुकात है. यहां विस्तार से समझते हैं कि यह घराना है क्या, और यह कैसे अस्तित्व में आया...

क्या होता है घराना
घराने को आमतौर पर संगीत के स्कूल या कलाकारों के समूह को कहा जाता है. दरअसल, संगीत ऐसी कला है जिसे कोई भी व्यक्ति एक दिन अथवा एक महीने या एक साल में नहीं सीख सकता. यह वर्षों का संघर्ष मांगता है. और जब गायक या वादक की उम्र बीतने लगती है तो उनके साथ ही उनका संगीत भी अनुभवी और उम्रदराज होने लगता है.

बाद में उनकी इसी विशिष्ट शैली को उनके शिष्य अपना लेते हैं और फिर वे उनके शिष्यों को भी उसी विशिष्ट शैली में शिक्षा देते हैं. धीरे-धीरे यह एक चेन बन जाती है और इसी को घराने की संज्ञा दी गई है.

इसे उदाहरण के तौर पर ऐसे समझें कि हर एक्टर के एक्टिंग का एक अपना स्टाइल होता है. ठीक वैसे ही हर संगीतकार का धुन बनाने का भी अपना अलग अंदाज होता है. अगर आप संगीत प्रेमी हैं तो कई बार आपको सुनकर ही समझ आ जाता होगा कि ये धुन किस संगीतकार की हो सकती है.

ऐसे ही अलग-अलग घराने भी अपना अंदाज समेटे होते हैं, भारत के अलग अलग संगीत घरानों ने अपना ही एक अलग गायन और वादन शैली का निर्माण किया है.

एक घराना स्थापित होने में लग जाती है कई पीढ़ियां

महान संगीतकारों तथा गायकों और वादकों पर लिखी गई एक पुस्तक 'वाह उस्ताद' में लेखक प्रवीण कुमार ने घराने को लेकर कहा कि ऐसा नहीं है कि किसी भी घराने में कुछ एक सालों में ही परिपक्वता आ जाती है, बल्कि उन्हें स्थापित करने में कई पीढ़ियां लग जाती हैं.

उन्होंने इसी किताब में लिखा कि घरानों में मर्यादा का खास ख्याल रखा जाता है और यहां अनुशासन का काफी महत्व भी होता है. अगर अनुशासन भंग हो तो जीवन भर के लिए किसी संगीत साधक को उस घराने से दूर होना पड़ सकता है.

आज के विपरीत 18वीं शताब्दी से पहले लोग संगीत सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए नहीं सुनते थे, बल्कि इस कला का सम्मान सबसे ज्यादा किया जाता था. उस वक्त इन घरानों की काफी प्रतिष्ठा थी और एक घराना अपनी विशिष्ट गायकी को दूसरे घराने के प्रभाव से बचाकर रखते थे

.
पहले एक गायक गलती से भी किसी और के घराने की गायकी नहीं गाते थे. न ही वे अपने गुरु के अलावा किसी और घराने के गुरु से संगीत सीखने की कोशिश करते थे. घरानों में यह नियम भी हुआ करता था कि एक शिष्य केवल एक ही घराने के गुरु से शिक्षा ले सकता है. [7,8]

घराने की गंडा बंधन रस्म

संगीत घराने में गुरु और शिष्यों से बीच गंडा बंधन रस्म हुआ करता था. इस रस्म के दौरान एक छोटा-सा संगीत सम्मेलन आयोजित किया जाता था और उस सम्मेलन में अन्य घराने के सारे संगीतज्ञ मौजूद होते थे. इस रस्म के दौरान गुरु अपने शिष्य की बांह पर एक ताबीज़ बांधा करते थे, जिसे गंडा बंधन कहा जाता था.

इस ताबीज या धागे को बांधने के बदले शिष्य अपने गुरु को दक्षिणा भेंट करत थे. हालांकि गुरु ये रस्म तभी करते थे जब उन्हें लगता था कि उनका शिष्य उनकी कला को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी उठा सकता है.

इस गंडा को बांधने का अर्थ होता है कि अब शिष्य एक ही गुरु से संगीत शिक्षा ग्रहण करेगा. इसके बाद अगर कोई शिष्य अपने गुरु को बदलने की कोशिश करता है तो उसे कोई भी अपना शिष्य नहीं बनाता था.

कैसे होता था घराने का निर्माण

किसी भी संगीत सिखाने वाले जगह को घराना तब ही माना जा सकता है, जब उसमें कम से कम तीन पीढ़ियों तक संगीत की धारा का प्रवाह हो.

इसके साथ ही संगीत के सभी घराने का एक अपना एक अलग कलात्मक अनुशासन होता है. अलग-अलग घरानों में विशेष गायन-शैलियां, विशेष राग और उनकी विशेष बंदिशें अलग-अलग होती हैं.

कुछ घरानों ने ख़्याल शैली को अपनाया तो कुछ घरानों ने ध्रुपद-धमार गायन शैली को अपनी विशेषता बना ली. कुछ घराने धमार तो कुछ ठुमरी शैली को अपनाते हैं.

क्यों जरूरी हैं ये घराने

वर्तमान में संगीत के घराने हमारे संगीत को सुरक्षित रखने का एक मात्र स्तम्भ हैं, इन घरानों की वजह से ही आज भी हम उस तरह की संगीत को सीख या समझ पा रहे हैं तो हमारे पूर्वजों ने शुरू की थी.

देशी राज्य और रजवाड़े संगीत के पोषक और संरक्षक रहे हैं. इस विषय में कुछ राज्यों और रियासतों ने अधिक ख्याति पाई है. जैसे पटियाला, बड़ौदा, इंदौर, जयपुर, ग्वालियर, मैसूर, रामपुर, लखनऊ, बनारस आदि.

प्रसिद्ध गायकी की कुछ प्रमुख शैलियां

हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं. इन शैलियों के नाम हैं- ध्रुपद, धमार, होरी, ख्याल, टप्पा, चतुरंग, रस सागर, तराना, सरगम और ठुमरी.

ध्रुपद
हिंदुस्तानी संगीत की ये शैली अब तक की सबसे पुरानी और भव्य शैली में से एक है. यह नाम ध्रुव और पद शब्दों से मिलकर बना है. कहा जाता है कि अकबर के शासनकाल में तानसेन ने अपनी इसी संगीत की शैली का प्रदर्शन किया था. इसके अलावा बैजू बावरा से लेकर ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर के दरबार तक ध्रुपद गाने वाले प्रवीण गायकों के साक्ष्य मिलते हैं. मध्यकाल में ध्रुपद शैली गायन की प्रमुख विधा बन गई थी लेकिन 18वीं शताब्दी तक आते आते ये हाशिये की स्थिति में पहुंच गई. ध्रुपद शैली के गानों में संस्कृत के अक्षरों का उपयोग किया जाता है और इसका उद्गम मंदिरों से हुआ है.
डागरी घराना

संगीत की इस शैली में आलाप पर पर ज्यादा जोर दिया जाता है. इस घराने से प्रशिक्षित संगीतकार डागर वाणी में गायन करते हैं. डागर मुसलमान गायक होते हैं लेकिन सामान्यतः हिंदू देवी-देवताओं के पाठों का गायन करते हैं.

दरभंगा घराना

इस घराने में ध्रुपद खंडार वाणी और गौहर वाणी में गाना गाया जाता है. इस शैली के संगीतकार रागालाप पर बल देते हैं और साथ ही तात्कालिक आलाप पर गीतों की रचना करते हैं

इस शैली का प्रतिनिधि मलिक परिवार है. इस घराने के मशहूर गायकों में राम चतुर मलिक, प्रेम कुमार मलिक और सियाराम तिवारी का नाम शामिल है.

बेतिया घराना

यह घराना सिर्फ परिवार के भीतर प्रशिक्षित लोगों को ज्ञात कुछ अनोखी तकनीकों वाली 'नौहर और खंडार वाणी' शैलियों का प्रदर्शन करता है. इस शैली का प्रतिनिधि मिश्र परिवार है.

V. निष्कर्ष

ख्याल शैली के घराने

ग्वालियर घराना- यह सबसे पुराने और सबसे बड़े खयाल घरानों में शामिल है. यहां सीखने आए शिष्यों को काफी कठोर नियमों का पालन करता है क्योंकि यहां रागमाधुर्य और लय पर समान बल दिया जाता है. इस घराने के सबसे ज्यादा लोकप्रिय गायक नाथू खान और विष्णु पलुस्कर हैं.

किराना घराना- इस घराने का नाम राजस्थान के 'किराना' गांव के नाम पर रखा गया है और इसके स्थापक नायक गोपाल थें. हालांकि 20वीं सदी की शुरुआत में इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय अब्दुल करीम खान और अब्दुल वाहिद खान को जाता है.
इस घराने में धीमी गति वाले राग की प्रशिक्षण दी जाती है. इस शैली के कुछ प्रसिद्ध गायकों में पंडित भीमसेन जोशी और गंगू बाई हंगल जैसे महान कलाकार शामिल हैं.

आगरा घराना- इतिहासकारों की मानें तो इस घराने की स्थापना 19वीं सदी में खुदा बख्श ने की थी, लेकिन संगीतविदों का मानना है कि इसके संस्थापक हाजी सुजान खान थे. हालांकि इस घराने को फैयाज खान पुनर्जीवित करने का काम किया था, जिसके बाद इसका नाम रंगीला घराना पड़ गया. वर्तमान में इस शैली के प्रमुख गायकों में सी. आर. व्यास और विजय किचलु जैसे महान गायक आते है.

पटियाला घराना- 19वीं सदी में बड़े फतेह अली खान और अली बख्श खान ने इस घराने की शुरुआत की थी. इस घराने को पंजाब में पटियाला के महाराजा का समर्थन भी मिला हुआ है. इस घराने में बृहत्तर लय के उपयोग पर बल का प्रशिक्षण दिया जाता है.

इस घराने के सबसे प्रसिद्ध संगीतकार बड़े गुलाम अली खान साहब थे. उन्हें भारत के प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायकों में से एक कहा जाता है. यह घराना तराना शैली के अद्वितीय तान, गमक और गायकी के लिये प्रसिद्ध है. [11]

संदर्भ

1. "हिंदुस्तानी संगीत के घराने - हिंदुस्तानी शास्त्रीय घराने - हिंदुस्तानी संगीत घराने" . कल्चरलइंडिया.नेट वेबसाइट .
2. ↑ आईटीसी संगीत अनुसंधान
3. ^ "दिल्ली घराना - उस्तादों की दुर्लभ पुरानी तस्वीरें" . गूगल आर्ट्स एंड कल्चर वेबसाइट .
4. ^ ते निजेनहुइस, एम्मी (1974). भारतीय संगीत: इतिहास और संरचना . बेल्जियम. पृ. 90.
5. ^ इमानी, अलिफियाह (20 अगस्त 2015)। "कव्वाल गली: वह गली जो कभी नहीं सोती" । हेराल्ड पत्रिका ।
6. ^ "जयपुरवाले - द लॉस्ट लिंक" । राजन पर्रिकर संगीत संग्रह । 22 फरवरी 2020 को लिया गया ।
7. ^ चौधरी, अमित (30 मार्च 2020)। राग की खोज: भारतीय संगीत पर एक सुधार । न्यूयॉर्क रिव्यू ऑफ बुक्स। पीपी. 170-172. आईएसबीएन 978-1-68137-479-6.
8. ^ "संगीत" । अमित चौधरी । 22 फरवरी 2020 को लिया गया ।
9. ^ खान, मोबारका होसेना (1988). संगीत और उसका अध्ययन . स्टर्लिंग पब्लिशर्स. पृ. 49. आईएसबीएन 9788120707641.
10. ↑ मिसरा, सुशीला (1981). हिंदुस्तानी संगीत के महान गुरु . हेम पब्लिशर्स गूगल बुक्स वेबसाइट के माध्यम से. पृ. 118.
11. ↑ आईटीसी संगीत अनुसंधान अकादमी में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आधुनिक इतिहास ।